नियम बनते हैं पालन करने के लिए

वक्त रात्रि के नौ बजे का,शहर का सर्वाधिक व्यस्त चौराहा और उस चौराहे पर यातायात नियंत्रण का प्रयास करता ट्रैफिक सिग्नल। एक मोटरसाइकिल सवार चौक पर पहुंचा तो लाल रंग की लाईट रूकने का इशारा कर रही थी। गाड़ी चालक ने दोनो तरफ देखा तो कोई वाहन दाई या बाई ओर से जाते नहीं दिखा। लाल बत्ती का इशारा होने के बावजूद मोटर साइकिल सवार ने गाड़ी की गति बढ़ाते हुए ट्रैफिक नियम को तोड़ा और आगे निकल गया। उस गाड़ी वाले की देखा - देखी पीछे से आने वाले स्कूटर चालक ने भी आव देखा ना ताव ट्रैफिक नियम को उद्दडण्ता से तोडते हुए मोटरसाइकिल वाले के साथ स्वयं भी चौराहे को पार कर लिया। वहीं उसी चौराहे पर कुछ देर बाद फिर एक मोटरसाइकिल चालक आ रहा था।

सिग्नल रूकने का था दोनों ओर से कोई व्यवधान नही था मगर फिर भी उस मोटरसाइकिल चालक ने नियम का पालन करना उचित समझा। वह रूक गया। उसे देख कर पीछे - पीछे आने वाली लूना सवार भी रूक गया।

ऐसे ही एक कार्यालय में सुबह आफिस आने का समय 9.30 बजे तक का था। एक कर्मचारी रोज पन्द्रह मिनट देरी से आता था। उसकी देखा - देखी धीरे - धीरे उस कार्यालय के आधे से ज्यादा कर्मचारी पन्द्रह मिनट देरी से आने लगे तथा उस देरी को उन्होने अपना अधिकार मान लिया। उपर से यह तर्क कि, 'देरी से आते है तो जाते भी तो देरी से,क्या गलत करते हैं'।

कैरियर विचार

मनुष्य स्वभाव ही है कि बंधन उसे स्वीकार नहीं होता। नियम एवं कानून मनूष्य के व्यवहार एवं कार्यकलाप एक रूटीनमें बांधे रखते है। यह भी एक नियम है कि नियम बनते ही नियम तोडने का प्रलोभन बढ़ जाता है पर हम यह नही सोचते कि उन नियमों का उल्लंघन करना हमारे लिए कितना भारी पड़ सकता है। मसलन बंद रेल्वे क्रासिंग में जल्दबाजी के चक्कर में न जाने कितने लोग हर वर्ष अपनी जान गवां देते हैं। कमोबेश यही हाल हमारे कार्यक्षेत्र में भी होता है। किसी भी अधिकारी के द्वारा कड़ाई से पालन करवाए जाने वाले नियम का विरोध अक्सर होता है। अगर एक ने नियम तोड़ा तो पीछे-पीछे नियम तोड़ने वालों का कारवां बन जाता है। हमारी मानसिकता भी ऐसी बन गई है कि हम गलत विचारों, गलत कार्यो का जल्दी अनुसरण करतें है।यदि कोई कर्मचारी अपने कार्य में बहुत ही नियमित है, समय का पाबंद है तो हम कभी भी उनका अनुसरण करने का प्रयास नही करते। याद रखिए नियम को तोड़ना आसान होता है लेकिन उन नियमों का ईमानदारी से पालन करने के लिए वैसा उच्च चरित्र होना चाहिए।

श्रेष्ठता का पाठ

1 समाज एवं कार्यालय के सर्वसम्मति से बनाए गए नियमों का उल्लंघन करना आपकी चारित्रिक कमजोरियों को दर्शाता है।

2 हम जितने प्रगतिशील होते जाते है उतने ही शिष्टाचार और अनुशासन की जरूरत हमें पड़ती जाती है। किसी प्रतिष्ठान या व्यापार की सफलता एवं प्रगति में वहां के नियमों का सख्ती से पालन बहुत ही महत्वपुर्ण होता है। जिस आफिस में नियमों को ब्रेक किया जाता है वहां स्वतः ही सफलता की राह में भी ब्रेक्स आ जाते है।

3 जैसे अक्सर दवा कड़वी होती है। नियम कानून भी कहीं - कहीं आरामदायक उपायों पर रोक लगाते हैं। इससे हमारे सहज स्वार्थ में भी उवरोध पैदा होते हैं। नियम तो कई हो सकते हैं,जैसे समय पाबंदी का नियम, मोबाईल एटिकेट्स के नियम,ई-मेल के नियम और ना जाने कितने नियम। जिन पर आगे हम चर्चा करेंगें। लेकिन एक बात जरूर ध्यान में रखिए कि जब भी इन नियमों को तोड़ते हैं, जानबूझकर तो आप अपने कार्यालय, अपने समाज, अपने परिवार तथा स्वयं के अंतर्मन को कमजोर बनाते है साथ ही कार्यालयीन स्टाफ जो आप को यह नियम तोड़ते देखता है उनकी नजरों में हीन बन जाते हैं। तो क्यों ना आज से ही नियमों का, अनुशासन का अपने जीवन में पालन करें और अपना चरित्र सबकी नजरों में ऊंचा उठाइएं।

श्रीमती वर्षा अजीत वरवंडकर
मनोवैज्ञानिक सलाहकार
एफ.एस.मेनेजमेंट ई.प्रा.लि.
मारूती विहार ,मोहबा बाजार
जी.ई.रोड़, रायपुर छ.ग.
Email : consult@fsindia.in